अध्याय 1

क़ानून और आपका रोज़मर्रा का जीवन

शुरुआत

हम क़ानून क्यों पढ़ते हैं? ज़्यादातर लोग क़ानून इसलिए पढ़ते हैं ताकि वे क़ानून के क्षेत्र में एक पेशेवर तरीक़े से काम कर सकें | जैसे कि वे वक़ील बनने के लिए, या फिर क़ानून पढ़ाने के लिए क़ानून की पढ़ाई करते हैं | वहीं कुछ दूसरे लोग क़ानून के बारे में कुछ सवालों में दिलचस्पी की वजह से क़ानून को लेकर शोध करते हैं | कुछ लोगों की दिलचस्पी नीतियों को बदलने या राजनेताओं के रूप में सरकार का हिस्सा बनने में भी होती है | लेकिन मान लीजिए कि हम इनमें से कुछ भी नहीं बनना चाहते हैं | या मान लीजिए कि हमें यह मालूम न हो कि ये चीज़ें कैसे की जाती हैं | अगर ऐसा है तब भी क्या क़ानून के बारे में पढ़ने, सोचने और सुनने का कोई मतलब है? और अगर हम ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहते हैं, तब क़ानून के बारे में सोचने का सही वक़्त क्या है?

रूबी की ही बात लीजिए |

रूबी 14 साल की एक मेहनती लड़की है | वह परंपरागत रूप से जंगल में रहने वाले एक आदिवासी समुदाय से आती है | स्कूल में जाकर पढ़ाई करने वाली अपने समुदाय की वह पहली लड़की है | गाँव के बड़े-बुजुर्ग लोग कुछ महत्वपूर्ण लगने वाले दस्तावेज़ों को पढ़ने और समझाने के लिए उसको बुलाते हैं | हाल ही में उनके राज्य में उच्च न्यायालय ने कुछ दिशानिर्देश जारी किए, जो कुछ जंगली इलाकों को हाथी गलियारा बनाने को लेकर थे | इन दिशानिर्देशों का असर व्यावसायिक रूप से चलने वाले होमस्टे और रिज़ॉर्टों पर पड़ने वाला है, जिनकी संख्या बढ़ रही है | समुदाय इन दिशानिर्देशों को समझना चाहता था | वे इस संदर्भ में अपने अधिकारों की सीमा भी जानना चाहते थे | नन्हे बच्चे ख़ास कर उत्साहित थे क्योंकि इसका मतलब यह था कि उन्हें अपनी खुली जगहें वापस मिल सकती थीं, जो उनके लिए अनमोल थीं | रूबी ने अपने दोस्त के अंकल के ज़रिए इस फ़ैसले की एक प्रति हासिल कर ली, जो उच्च न्यायालय में वकालत करते हैं | लेकिन फैसला 60 पन्नों में था जिसकी भाषा इतनी जटिल थी कि उसके लिए यह समझ पाना मुश्किल था कि असल में दिशानिर्देश क्या थे | रूबी को यह जान कर बड़ी उदास हुई कि जहां वह रहती थी, उस इलाक़े के बारे में अदालत ने जो कुछ कहा था उसे वह समझने में नाकाम थी | उसे अपने समुदाय की मदद नहीं कर पाने को लेकर हताशा भी महसूस हुई |

कानून और उसकी भाषा से इतनी अलग-थलग महसूस करने वाली रूबी अकेली नहीं है | जो भी चीज़ें हमें प्रभावित करती हैं, उन चीज़ों के ब्योरों और नतीजों को जानना-समझना हम सबके लिए संभव होना चाहिए | अगले कुछ पन्नों में आप रूबी जैसे और लोगों से मिलेंगे | आपकी मुलाक़ात मनोज से होगी जो संघर्ष के बाद अदालतों से अपने समुदाय के लिए फसल बीमा के रूप में राहत हासिल करने में कामयाब रहे | आप एक पुरस्कृत युवा फ़ोटोग्राफ़र सलीम से मिलेंगे, जिन्हें एक आंदोलन के फ़ोटोग्राफ़ लेने के अपने पेशेवर काम के दौरान अधिकारियों से उलझना पड़ गया | आप ध्रुविका से भी मिलेंगे, जो पैसों की जालसाजी का शिकार बनीं और उसके बाद आपराधिक कानूनी प्रक्रियाओं के भूलभुलैयों में दाखिल हुईं |

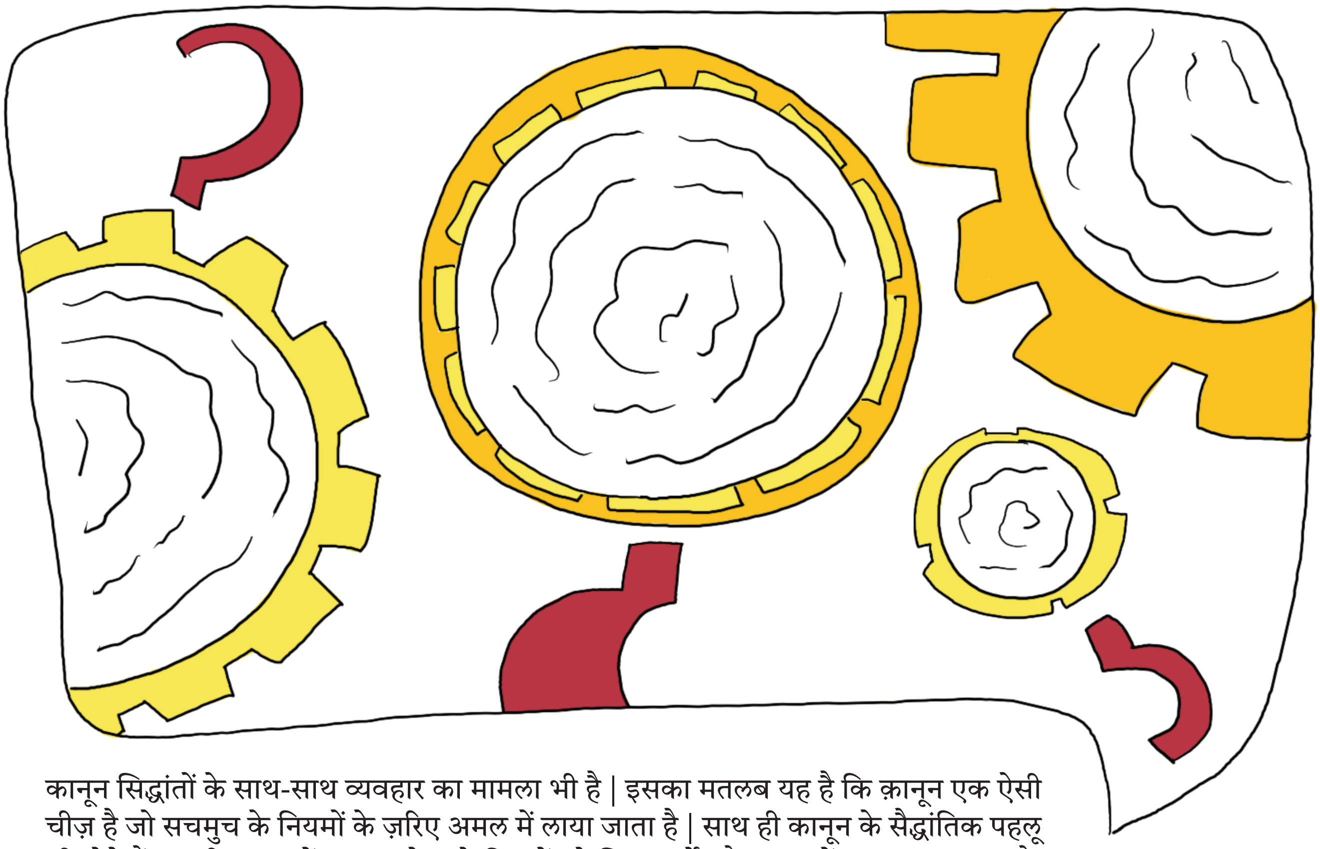

कानून सिद्धांतों के साथ-साथ व्यवहार का मामला भी है | इसका मतलब यह है कि क़ानून एक ऐसी चीज़ है जो सचमुच के नियमों के ज़रिए अमल में लाया जाता है | साथ ही कानून के सैद्धांतिक पहलू भी होते हैं | यानी अमल में लाए जाने वाले नियमों को जिन तर्कों और आधारों पर बनाया जाता है, वे इन्हीं सिद्धांतों से निकलते हैं | जैसे कि, क़ानून में बिना इजाज़त के किसी की निजी संपत्ति, जैसे कि घर, दुकान या ज़मीन में घुसने पर पाबंदी होती है | अगर आप ऐसा करेंगे तो ग़ैरक़ानूनी तौर पर घुसने के अपराध में आपको सज़ा हो सकती है | इस मनाही के पीछे सिद्धांत यह है कि आवाजाही की आपकी आजादी वहाँ ख़त्म हो सकती है, जहाँ किसी दूसरे की संपत्ति की सुरक्षा का अधिकार शुरू होता है | क़ानून भले ही इन दोनों चीजों को साथ मिला कर बनता है, अक्सर ही सिद्धांत और व्यवहार अलग-अलग हो जाते हैं | स्कूल और विश्वविद्यालयों में हम अक्सर सिर्फ़ सिद्धांतों को पढ़ते हैं | और अपने रोज़मर्रा के जीवन में अक्सर हम नियमों पर अमल करने पर ध्यान देते हैं | हम इनके पीछे के सिद्धांतों के बारे में बहुत नहीं सोचते हैं | रूबी, मनोज, ध्रुविका और सलीम के सामने जो समस्याएँ हैं वे क़ानून के व्यवहार वाले पहलू से संबंधित हैं | लेकिन उन पर कार्रवाई करने के लिए उन्हें इन व्यावहारिक समस्याओं में से हरेक के सिद्धांतों को समझने की ज़रूरत है |

इन सभी कहानियों में आप रोज़मर्रा के जीवन से उभरने वाले क़ानूनी सवालों को देखेंगे | आप देखेंगे कि नौजवान लोग अपने अधिकारों को हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं | आप इन हालात को सार्वजनिक या नागरिकों के लिए आम तौर पर उपलब्ध संदर्भों या जगहों में देखेंगे | इस छोटी सी व्यावहारिक किताब का उद्देश्य आपको अपने आसपास के परिवेश पर एक नई नज़र डालने के लिए प्रेरित करना है, ताकि आप इन तीन संदर्भों में क़ानून के बारे में सोचें |

आइए इनमें से हरेक संदर्भ पर थोड़े विस्तार से गौर करते हैं |

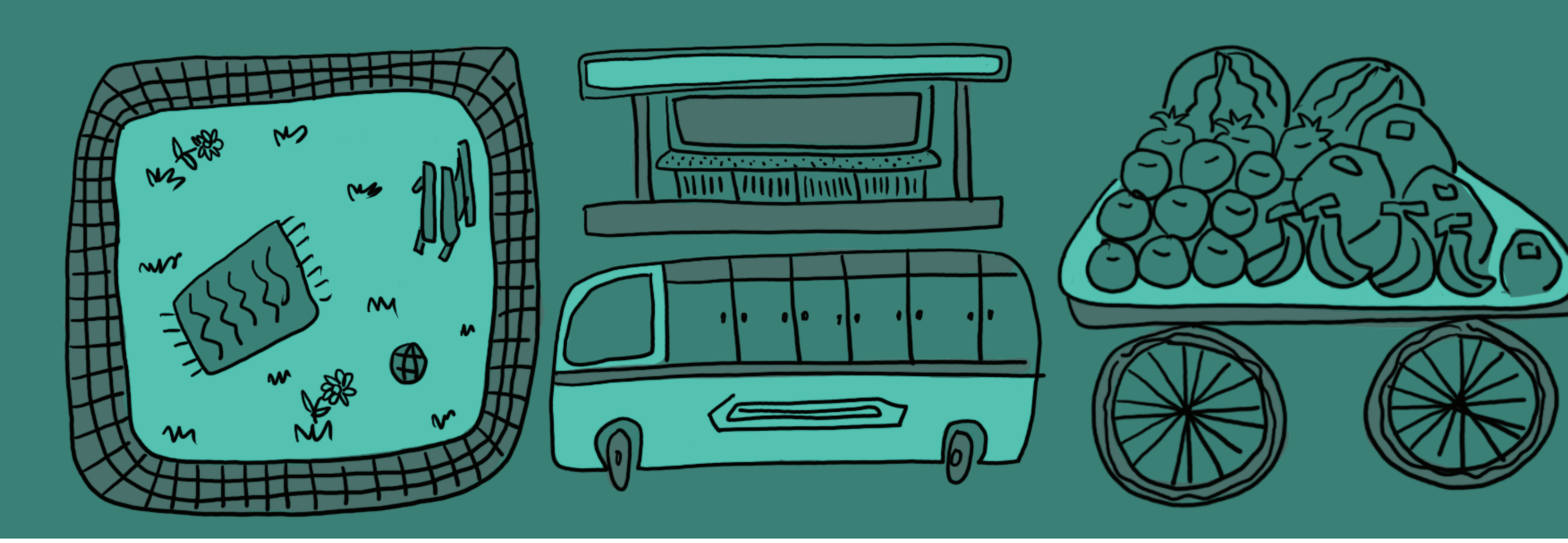

क़ानून और रोज़मर्रा का जीवन

आपने देखा होगा कि स्कूल की किसी इमारत, सिनेमाघर या बस और मेट्रो में घुसने पर इस बात की सूचनाएँ लगी होती हैं कि आप उस जगह में होते हुए क्या कर सकते हैं और क्या करने की आपको मनाही है | जैसे कि जब आप किसी स्कूल में जाते हैं तो वहाँ मोबाइल फ़ोन के इस्तेमाल के बारे में, या धूम्रपान करने और च्यूइंग गम को लेकर एक पोस्टर आपको दिख सकता है | हम जिन जगहों में आते-जाते और काम करते हैं, वहाँ की व्यवस्था और संचालन के लिए यह नियम बने होते हैं | इसके नतीजे में ये इसको प्रभावित करते हैं कि हम किस तरह से व्यवहार करें और कैसे पेश आएँ | हमारे रोज़मर्रा के जीवन में किस क़िस्म के नियम उभरते हैं? क्या क़ानून सिर्फ़ ऐसे नियमों को कहते हैं जिनका हमें पालन करना होता है? या यह उन अधिकारों को भी कहते हैं जो एक भरपूर जीवन जीने के लिए हमारे पास होने ज़रूरी हैं?

अगर क़ानून का मतलब सिर्फ़ नियम नहीं हैं, बल्कि कुछ और भी है, तो आइए स्कूल की इमारत वाले उदाहरण को फिर से लेते हैं | क्या स्कूल में हमारे कुछ अधिकार भी होते हैं जो निश्चित सुरक्षा विधियों, सेहतमंद और साफ़-सफ़ाई को लेकर मानदंडों या खेलकूद और सस्ती शिक्षा से जुड़ी सुविधाओं को निश्चित बनाते हैं?

इस किताब में हम ऐसे ही सवालों पर बात करने की कोशिश करेंगे | हम यह देखने की कोशिश करेंगे कि रोज़मर्रा की गतिविधियों में कानून किस तरह शामिल होता है | हम ऐसा करने की कोशिश इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हम क़ानून के बारे में यह विचार आपके सामने रखना चाहते हैं कि यह सिर्फ़ एक अमूर्त, समझ में न आने वाली चीज़ नहीं है | यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो बहुत दूर होती है, और जिसकी ज़रूरत सिर्फ अदालतों, संसदों और सरकारी दफ़्तरों में होती है | बल्कि क़ानून एक ऐसी चीज़ है जिसे हम छू सकते हैं, महसूस कर सकते हैं | यह हमारे बहुत क़रीब की चीज़ है | आपको क्या लगता है? क्या क़ानून ऐसी चीज़ है जिस पर सिर्फ़ सोचा जा सकता है? या हम इसे महसूस भी कर सकते हैं? एक ऐसी चीज़ जो हम पर असर डालती है?

हममें से कइयों को दूसरों की तुलना में कानून अधिक साफ़ दिखाई पड़ सकता है | जैसे कि अगर हमारे मुहल्ले में पुलिस की गश्ती हो, जाँच करने के लिए चेक प्वाइंट्स हों, या कर्फ़्यू हो | ऐसी चीजें क्यों होती हैं, हम उनकी वजहों के बारे में सोच सकते हैं | लेकिन हम अपने आसपास उनकी मौजूदगी को महसूस भी कर सकते हैं | क़ानून की ये निशानियाँ फ़ौरी तौर पर इस बात को तय करती हैं कि हम अपना जीवन किस तरह जीएँ | लेकिन क़ानून हमेशा इतना ज़ाहिर नहीं होता है | जैसे कि अगर हम शिक्षा के अधिकार के बारे में सोचें तो हमारा ध्यान फ़ौरन ही इस बात की तरफ़ जाएगा कि क्या हमारे मुहल्ले में स्कूल है | लेकिन क्या स्कूल इस बात को निश्चित बनाता है कि बच्चों के पास भारत में मुफ़्त और अनिवार्य शिक्षा का जो अधिकार है, वे उस पर अमल कर सकते हैं?

अगर आप क़ानून को देखने की कोशिश कर रहे हैं तो आप कहाँ देखेंगे? क्या आप किसी किताब को देखेंगे, जैसे कि अपने संविधान को? क्या आप इसे ऐसी जगहों में खोज सकते हैं जहाँ आप आते-जाते हैं?

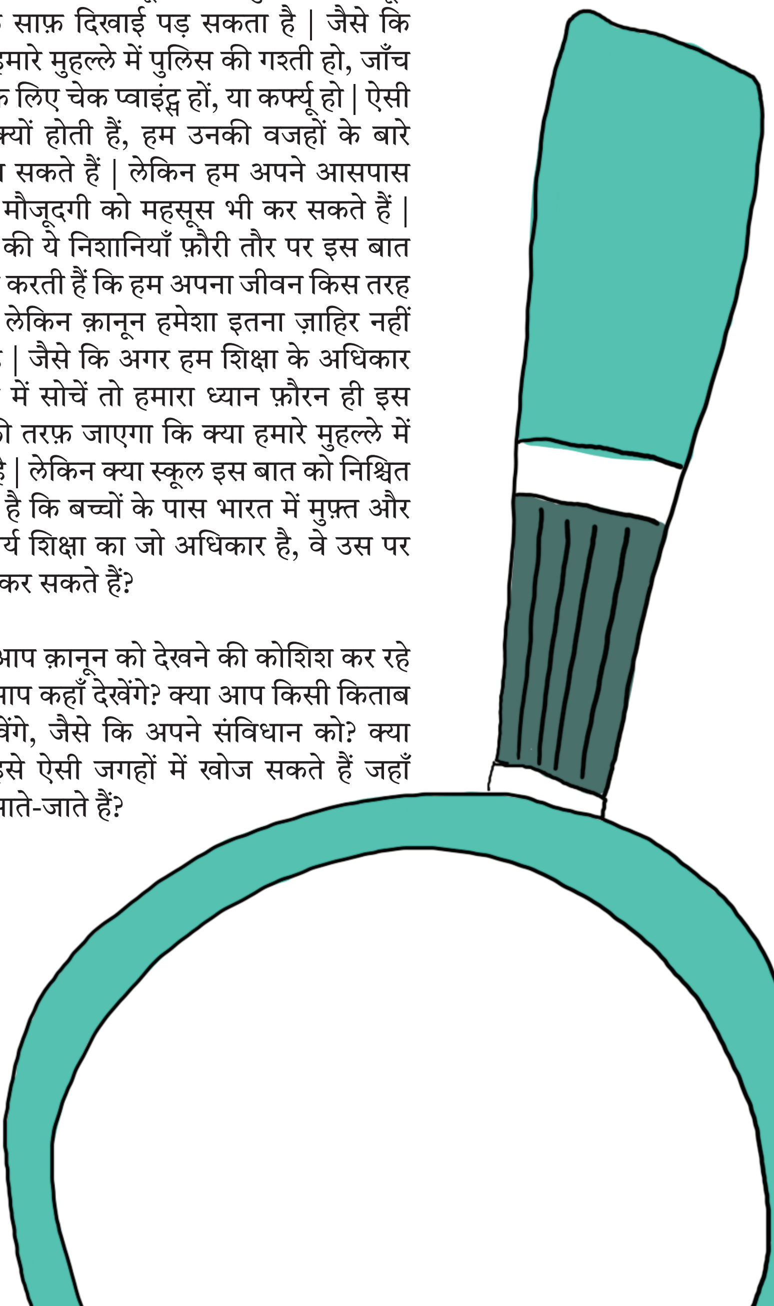

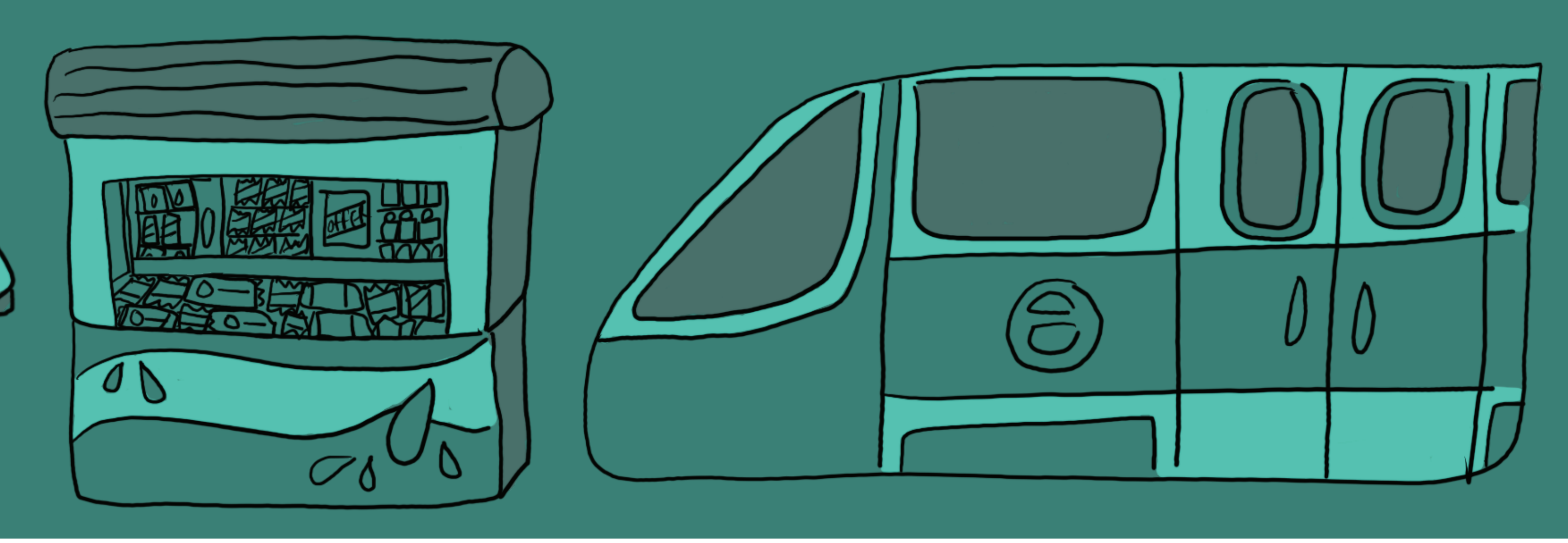

अगली बार जब आप किसी बस या मेट्रो में जाएँ, तो आसपास देखें | देखें कि क़ानून कौन-कौन से रूप लेता है | एक उदाहरण लेते हैं | मेट्रो में सीसीटीवी कैमरा होने के लिए क्या एक क़ानून की ज़रूरत पड़ती है? क्या हम उनके मकसद के बारे में सोच सकते हैं? अनेक लोग तर्क देते हैं कि मेट्रो पर लोगों की सुरक्षा को निश्चित बनाने के लिए ऐसे कैमरों का होना महत्वपूर्ण है | इसलिए ऐसे कैमरे महत्वपूर्ण हैं ताकि लोगों के पास शहर में आवाजाही का अधिकार हो | वहीं दूसरे लोग इस बात के ख़िलाफ़ यह तर्क दे सकते हैं कि आवाजाही के अधिकार को लोगों की निजता छीने बग़ैर भी मुहैया कराया जा सकता है | इसके लिए हमारी सारी आवाजाही और गतिविधियों को सरकार द्वारा निगरानी करना ज़रूरी नहीं है | हम चाहते हैं कि जब आप घर से स्कूल, काम की जगह, सिनेमाघर, अस्पताल या खेलने की जगहों पर जाएं तो यह सोचें कि आपको क़ानून के दूसरे पहलू कहाँ-कहाँ दिखाई पड़ते हैं |

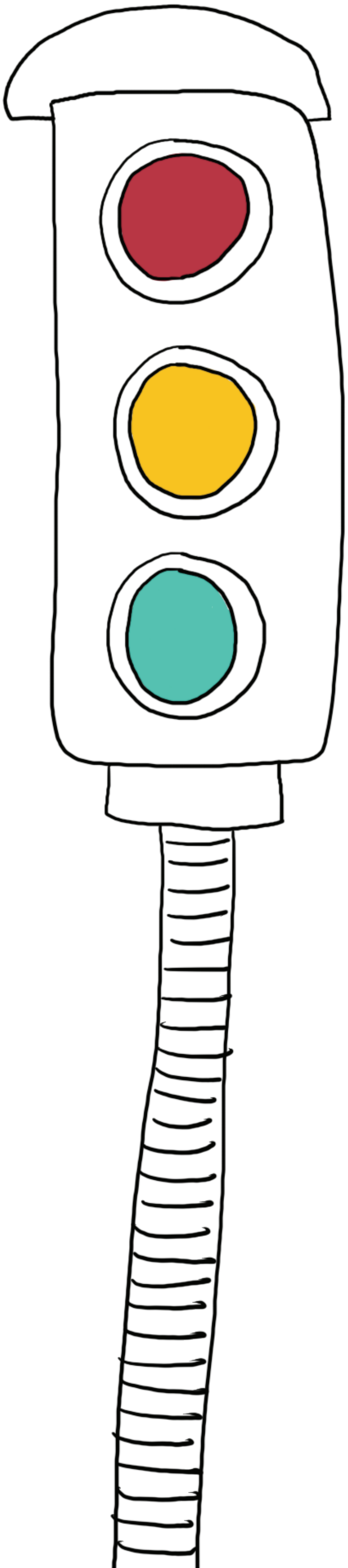

यह किताब आपको इस बात के लिए प्रेरित करती है कि आप क़ानून के बारे में अलग क़िस्म से सोचें | आप यह देख सकें कि क़ानून एक ऐसी चीज़ है जो सिर्फ़ किताबों से नहीं निकलती, बल्कि जिन जगहों में हम रहते हैं यह वहाँ भी आकार लेती है | एक बार जब आप इस विचार को अपना लेते हैं, तब हम यह भी चाहेंगे कि आप अपने आसपास देखें और कुछ ख़ास क़िस्म की सामग्री और स्थानों पर गौर करें | यह सामग्री कुछ नोटिसें हो सकती हैं या फिर ट्रैफ़िक लाइट जैसी कोई चीज़ हो सकती है | स्थानों में पिकनिक या आंदोलन की जगहें हो सकती हैं | इन पर गौर करते हुए आप यह सोचें कि कैसे ये विभिन्न सामग्री, वस्तुएँ और जगहें एक ख़ास क़िस्म के अर्थ बनाती हैं, जिनकी वजह से हम यह सोचने लगते हैं कि हमें किस तरह पेश आना चाहिए, या कैसे हमें किसी ख़ास जगह में माँगें रखनी चाहिए |

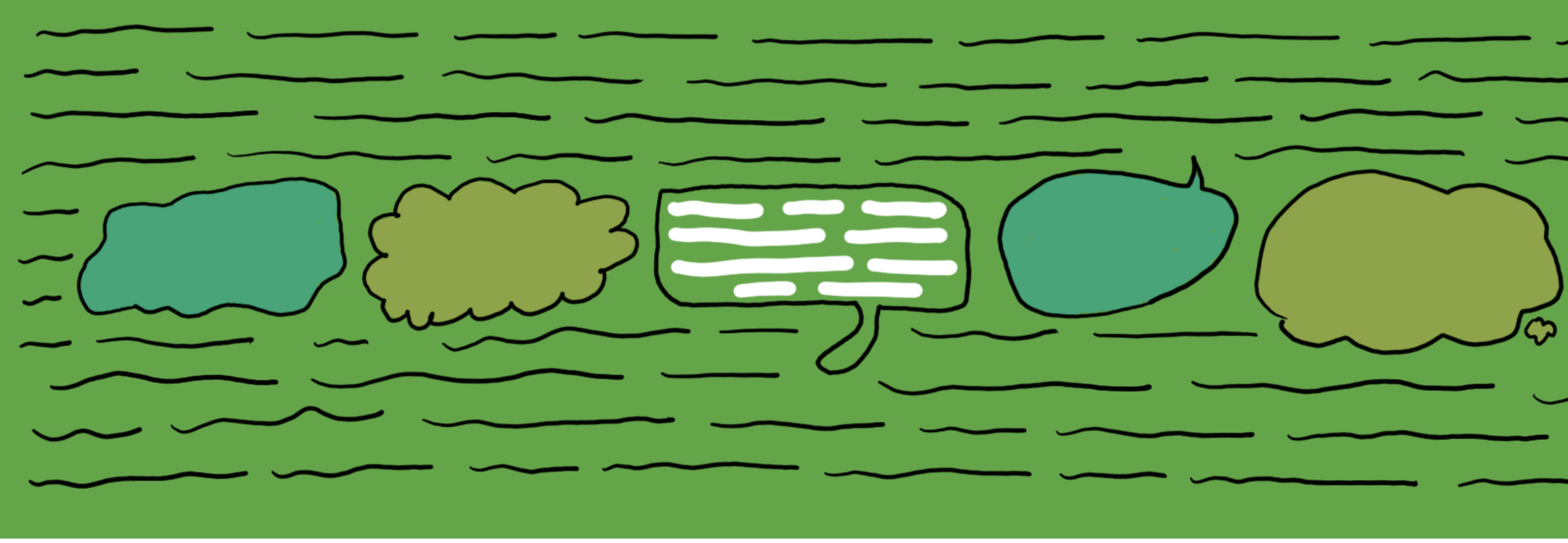

युवा और क़ानून

नीचे दिए गए हालात के बारे में सोचें |

> आपको शहर के केंद्र से मुख्य ट्रेन स्टेशन जाना है | आपको सिर्फ़ इतना पता है कि आप अभी कहाँ हैं, और आपको कहाँ पहुँचना है | लेकिन आपको यह नहीं पता कि आप वहाँ किस तरह जाएँगे | तब इनमें से कौन-सा उपाय सबसे मददगार होगा?
>
> ❀ आपके चलने से पहले कोई आपके पूरे रास्ते की जानकारी दे |
>
> ❀ आप चलते जाएँ और रास्ते में लोगों से पूछते जाएँ |
>
> ❀ आपके पास अपना एक मैप (नक़्शा) हो जिसमें आपका रास्ता साफ़-साफ बताया गया हो |

पहले दोनों उपाय उपयोगी हो सकते हैं, लेकिन वे शायद उतने भरोसेमंद न हों | मुमकिन है कि आप रास्ते भूल जाएँ, या आप जिससे रास्ता पूछ रहे हों उसको सही रास्ता न मालूम हो | यह भी हो सकता है कि बीच में कोई रास्ता बंद हो और आपको पता न हो कि वहाँ से किस तरफ़ जाया जाए | अगर आप रास्ते में लोगों से पूछते हुए चलें तो यह मुमकिन है कि आपको अधिक वक़्त लग जाए क्योंकि मुमकिन है लोगों को भी रास्ता न मालूम हो | अगर आपके पास एक मैप हो तो आप ख़ुद सबसे अच्छा रास्ता चुन सकते हैं | रास्ता बंद हो या लोग आपको न बता पाएँ कि आप कहां हैं, तब भी मैप आपकी मदद कर सकता है |

इसी तरह आपके पास जो सबसे शक्तिशाली औज़ार हो सकता है वह है क़ानून की जानकारी है और यह पता होना कि इसके बारे में जानकारी और कहां मिल सकती है | अपने अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी होना वैसा ही है जैसे आपके पास अपना एक मैप होना | इसकी मदद से आप ख़ुद को अन्याय से बचा सकते हैं | वकीलों जैसे दूसरे विशेषज्ञ इसमें आपकी मदद कर सकते हैं, लेकिन इंसाफ़ के सफ़र में आप खो जाएँगे अगर आप इस बात की साफ़-साफ़ पहचान करने के काबिल नहीं है कि समस्या कहां है और आपको कहां से मदद लेनी चाहिए |

कल्पना कीजिए कि आपको यह पता न हो कि भारत के संविधान में बराबरी के अधिकार की एक मौलिक अधिकार के रूप में गारंटी की गई है | इसका क्या नतीजा हो सकता है? तब आप शायद यह नहीं जान पाएँ कि कोई रोज़गारदाता आपके साथ जाति, धर्म, लिंग वग़ैरह के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकता है | आप यह नहीं जान पाएँ कि अगर किसी ने आपके साथ भेदभाव किया तो आप अदालत जा सकते हैं | मान लीजिए कि आप यह नहीं जानते कि भारत में 18 साल उम्र से अधिक के हरेक नागरिक को वोट डालने का अधिकार है | आपको यह नहीं पता चलेगा कि आप चुनावों में भागीदारी कर सकते हैं | इस तरह आप सरकार के बारे में अपनी राय को व्यक्त करने की सबसे अहम भूमिका यानी अपने वोट का इस्तेमाल नहीं कर पाएँगे | आप अन्यायपूर्ण व्यवहारों का निशाना बन सकते हैं, अगर आप यह नहीं जानते कि आपके अधिकार क्या हैं, और आप उनकी रक्षा कैसे कर सकते हैं |

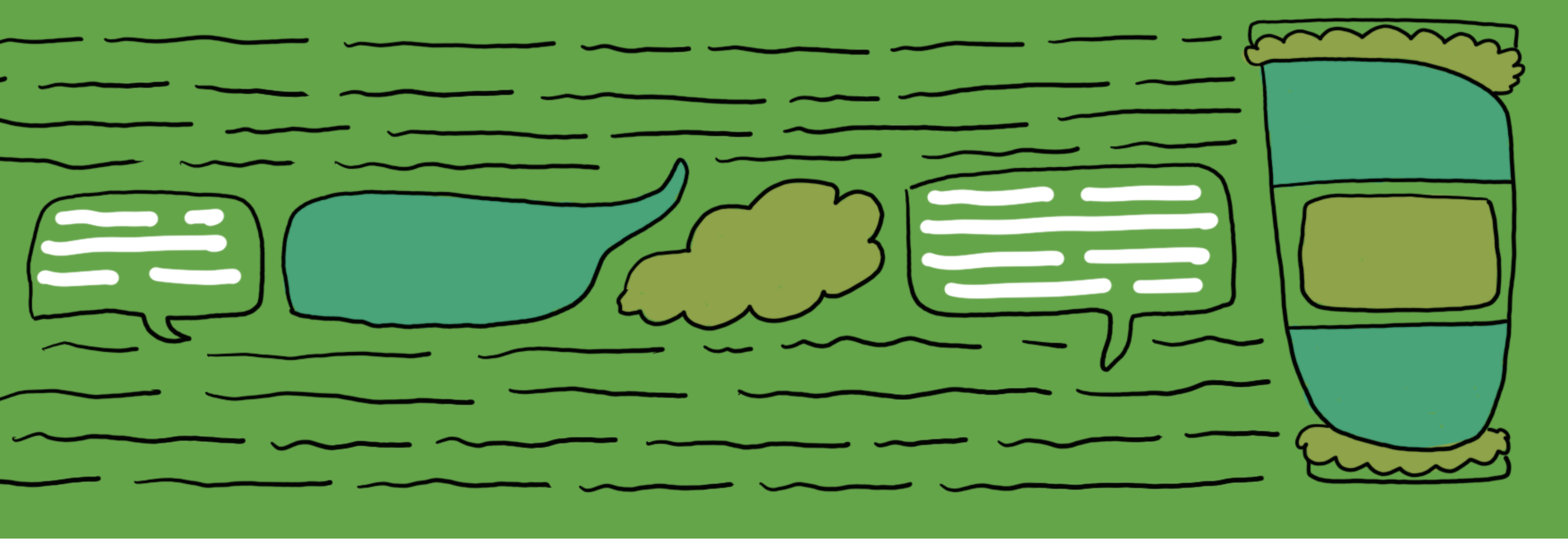

ऐसा लगता है कि क़ानून बड़ों की चीज़ हैं | लेकिन क्या यह सच है कि ये सिर्फ़ बड़ी उम्र के लोगों को ही प्रभावित करते हैं? युवा लोगों का क़ानून से क्या रिश्ता हो सकता है? सच बात तो यह है कि क़ानून हम सभी के लिए प्रासंगिक हैं, चाहे हम किसी भी हालात में हों, और चाहे हमारी उम्र कुछ भी हो | जैसे कि समानता के अधिकार की गारंटी हम सभी के लिए है | अगर आपकी उम्र चौदह साल है और आपको आपके धर्म के चलते किसी खास स्कूल में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं मिलती तो आप उस स्कूल के ख़िलाफ़ अदालत जा सकते हैं | जब आपको अपना पहला रोज़गार मिलता है, और अगर आप एक महिला हैं और आप किसी भी रूप में यौन उत्पीड़न का सामना करती हैं, तब आप अपने संगठन की अंदरूनी शिकायत समिति में अपील कर सकती हैं | क़ानून के मुताबिक़ काम की जगहों पर ऐसी समिति का होना ज़रूरी है | अपने अधिकारों की माँग उठाने के लिए आपको वयस्क होने या एक ख़ास हैसियत हासिल करना ज़रूरी नहीं है | अपने जन्म से भारत का नागरिक होने के नाते आप हमारे संविधान के तहत इन अधिकारों के हक़दार हैं |

इसका एक दूसरा पहलू भी है | कानून आप पर हमेशा लागू होता है, यह आपके एक ख़ास उम्र का होने तक इंतज़ार नहीं करता है | क़ानून का पालन नहीं करने पर आपको सज़ा हो सकती है | अगर आप तेज़ रफ़्तार गाड़ी चला रहे हों और पुलिसकर्मी आपको पकड़ ले तो आप यह दावा नहीं कर सकते कि आपको गति सीमा (स्पीड लिमिट) नहीं पता थी और आपने बस अभी अभी ड्राइव करना सीखा है | पुलिसकर्मी आपको जुर्माना कर सकता है | अगर आप अभी अवयस्क हैं, यानी अगर आप 18 साल से कम उम्र के हैं, तो इस बात का ख़्याल रखा जाएगा | लेकिन आपको अभी भी उन नुक़सानों के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है जो आपकी तेज रफ्तार से हुए हों | हम चाहे किसी भी पृष्ठभूमि से आते हों, हम सभी के लिए क़ानून का पालन करना ज़रूरी होता है |

क़ानून एक मुर्दा चीज़ नहीं होती है | जैसे कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम सिर्फ़ 2004 में जाकर पारित हुआ था | संसद में जब कोई विधेयक पारित होकर अधिनियम बनता है, तो आप शायद इस प्रक्रिया का सीधे-सीधे हिस्सा नहीं होते हैं | लेकिन किसी विधेयक पर होने वाली सार्वजनिक चर्चा में हिस्सेदारी करने के लिए आपको 18 साल से अधिक उम्र का होना ज़रूरी नहीं है | इसे विधेयक-पूर्व सार्वजनिक परामर्श कहा जाता है | आप अपने दोस्तों के साथ मिल कर ऐसे कानूनों के लिए अभियान चला सकते हैं जो अधिक न्यायपूर्ण हों, और जो अधिक लोगों की जरूरतों को पूरा करते हों | एक बार आप वोट डालने की उम्र के हो जाएँ तो आप इस बात का फ़ैसला कर सकते हैं कि संसद में आपका प्रतिनिधित्व कौन करेगा | अगर आप अपने अधिकारों और कर्तव्यों को जानते हैं, आप यह जानते हैं कि आपसे क्या अपेक्षा की जाती है, आप बदलाव ला सकते हैं |

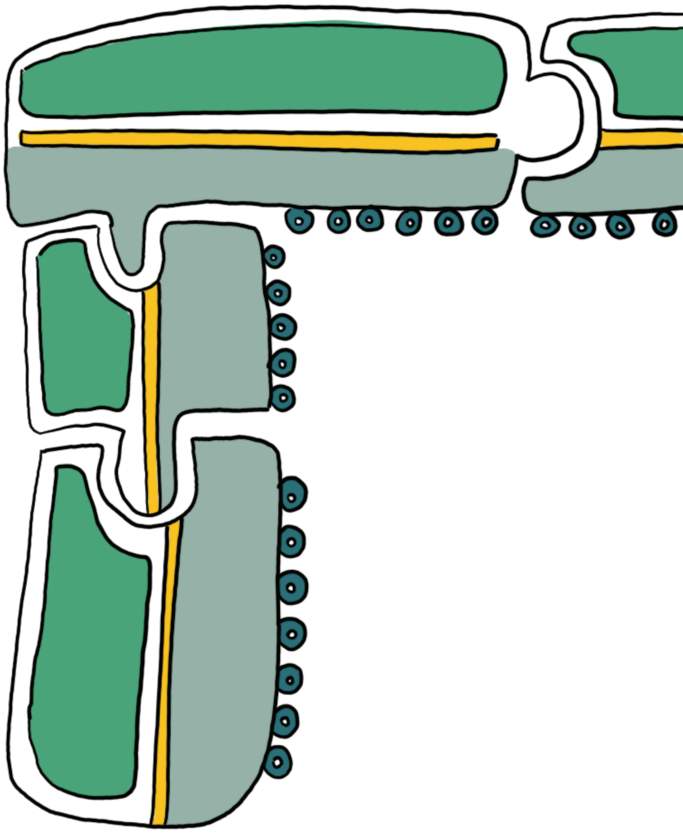

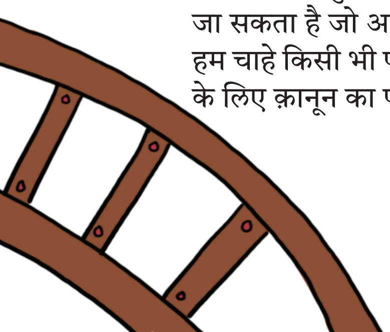

हमारी नागरिक जगहें

तो अब हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में क़ानून के बारे में सोच रहे हैं | लेकिन यह रोज़मर्रा का जीवन है क्या? हम किसी भी दिन अलग-अलग क़िस्म के हालात को देखते हैं | आप अपने परिवेश की रोशनी में अपने बारे में सोचिए | आप जिन अलग अलग जगहों पर जाते हैं, क्या आप एक ही शख़्स होते हैं? क्या आप घर पर, स्कूल में, खेल के मैदान में, अपने काम की जगह पर या अपने स्थानीय प्रशासनिक दफ़्तर में जाने पर एक ही तरह से व्यवहार करते हैं? जिस तरह हम अलग अलग जगहों पर अलग अलग भूमिकाएँ अपना लेते हैं, क़ानून के साथ भी ऐसा ही है | क़ानून के बारे समझने का एक बेहतर तरीक़ा यह है कि इसे जगहों के संदर्भ में समझा जाए |

आपका घर, आपका स्कूल या आपके काम की जगह कुछ जानी-पहचानी जगहें हो सकती हैं | इस किताब में ध्यान इस चर्चा पर दिया गया है कि नागरिक जगहों पर आपके सार्वजनिक जीवन और सार्वजनिक भागीदारी को क़ानून किस तरह आकार देता है |

नागरिक जगहें क्या होती हैं?

नागरिक जगहों को किसी समुदाय के एक विस्तार के रूप में सोचें | यह एक भौतिक जगह होती है जहाँ कोई व्यक्ति ख़ुद को व्यक्त कर सकता है और समुदाय का एक सक्रिय सदस्य हो सकता है | नागरिक जगहों का उपयोग संगठित होने, व्यक्त करने, आंदोलन करने या विरोध ज़ाहिर करने तथा बदलाव लाने के लिए किया जा सकता है | आइए अपने आसपास के परिवेश की छानबीन करते हैं और देखते हैं कि कैसे हम इन जगहों को नागरिक जगहों के रूप में समझ सकते हैं |

नागरिक जगहें कार्रवाई से जुड़ी हुई होती हैं | एक क़ानूनी, राजनीतिक और सामाजिक दायरा होता है जो हमसे माँग करता है कि हम

जानकार बनें

जागरूक बनें

भागीदार बनें

आप अपने आसपास इन तीनों साझे क्षेत्रों की पहचान करें | इनके रोज़मर्रा के मक़सद के बारे में सोचें और इसके बारे में सोचें कि इन्हें किस तरह नागरिक जगहों के रूप में बदला जा सकता है |

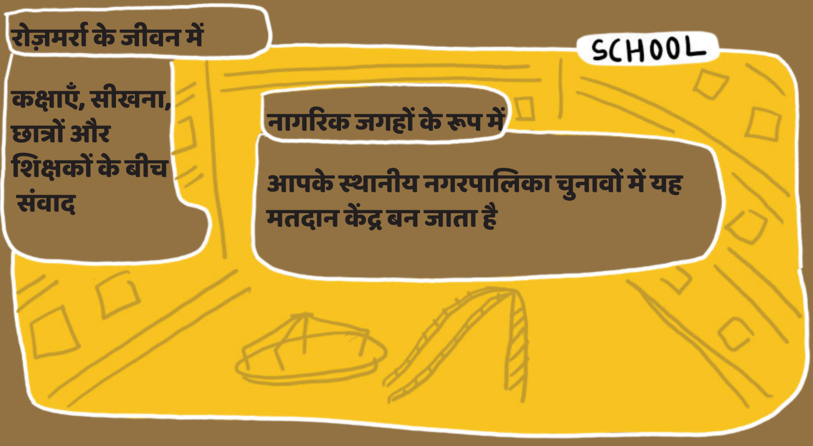

लेकिन बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है | नागरिक जगहों का बचाव करने की ज़रूरत पड़ती है | ये ऐसी जगहें हैं जहाँ अपनी पृष्ठभूमि, उम्र, जाति, धर्म, लिंग, रंग के आधार पर भेदभाव के बिना सभी नागरिक अपने अधिकारों पर अमल करने के लिए आ सकते हैं | इसका मतलब यह है कि इन जगहों का सुरक्षित होना ज़रूरी है | इस किताब में कुछ ऐसे बड़े क़ानूनी सवाल दिए गए हैं जो आपको नागरिक जगहों को समझने में आपकी मदद करेंगे | आप इनमें अपनी भूमिका को और अपनी भूमिका निभाने के तरीक़ों को भी समझ सकेंगे |

किताब का उपयोग कैसे करें

अगले कुछ अध्यायों में आप उस अहम क़ानूनी संरचना को समझने के एक सफ़र पर निकलेंगे जो आपकी नागरिक जगह को संभव बनाती है | आप इन मुद्दों पर क़रीब से नज़र डालेंगे:

संविधान

इसके बुनियादी सिद्धांत क्या हैं? ये सिद्धांत किस तरह हमारे क़ानूनों का आधार बनते हैं?

अदालतें

हमारी अलग-अलग अदालतें कैसे बनी हैं, और उनका आपस में क्या रिश्ता है? उन तक कैसे पहुँचा जा सकता है?

आपराधिक न्याय प्रणाली

जब हम पाते हैं कि हमारा क़ानून के साथ एक टकराव की स्थिति बन रही है, ऐसे में क्या होता है? अगर हम एक अपराध का शिकार बन जाएँ तो हमें व्यवस्था के साथ कैसे पेश आना चाहिए?

चुनावी व्यवस्था

सरकार में औपचारिक भागीदारी कैसी होती है? इसको संभव बनाने वाले सिद्धांत और व्यवस्थाएँ कौन-सी हैं?

लेकिन आपको एक सीधा नियम याद रहना चाहिए | हम सिद्धांत और व्यवहार के बीच की खाई को भरने की कोशिश कर रहे हैं | इसलिए हरेक सिद्धांत के साथ-साथ उससे जुड़ी गतिविधियाँ दी जाएँगी | और हरेक बिंदु पर आपसे उम्मीद की जाती है कि आप अपने संदर्भ और परिवेश के बारे में सोचें |

जहाँ भी आप ? चिह्न को देखें, अपने आसपास देखने और सोचने के लिए तैयार हो जाएँ - आपको अपने एकदम आसपास के परिवेश पर, या उस कार्रवाई के बारे में सोचने की ज़रूरत होगी जिसे आप पढ़ रहे हैं |

जब आप चिह्न को देखें, तो ठहरें | यह ऐसी जगह है जहां आपको रुक कर एक खास तौर से गौर करने की ज़रूरत है | इसको आप एक ख़ास बिंदु या तरकीब के रूप में देखिए - यह एक ऐसी चीज़ है जिसे याद रखने की ज़रूरत है |

हर अध्याय की शब्दावली को भी ज़रूर देखें, उनके बारे में और भी जानकारी जुटाएँ | यह किताब एक शुरुआत है, इसको आधार बना कर और भी चीज़ें जानने की कोशिश करें |

आख़िरकार यह किताब आपको सशक्त बनाने के लिए बनी है | हम उन समस्याओं की बात उठा रहे हैं, जो अक्सर ही बहुत मुश्किल मालूम पड़ती हैं | हम उन्हें छोटी, और आसानी से हल हो सकने वाले हिस्सों में सुलझा कर पेश कर रहे हैं |

एक बार इस किताब को पूरा कर लेने के बाद हमें क्या अंतर दिखाई देगा?

इस किताब के अंत तक पहुँचने के बाद आप इन बातों में सक्षम हो सकते हैं:

- अपने रोज़मर्रा के जीवन और अपने करीबी परिवेश में क़ानून की मौजूदगी को पहचानना |
- क़ानून को दूर-दराज की कोई चीज़ न समझ कर इसे अपने ख़ास संदर्भ में सोचना |
- संस्थानों, व्यक्तियों और विधियों के पीछे के सिद्धांतों और तर्क को समझना |
- अपनी नागरिक जगह को एक ऐसी जगहों के रूप में समझना जो साफ़ हैं और उनमें कार्रवाई की जा सकती है |
क़ानून के बारे में सरल और आसान तरीक़े से बातें करना!

विचार यह है कि आप अपने आसपास के परिवेश को एक नई नज़र से देखें, अपने फ़ैसले ख़ुद से लेने की ताकत को हासिल करें और उम्मीद को फिर से जगाएँ |